Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 6

भक्ति-सूफी परंपराएँ

भाग - 7

प्रीतेश जोशी



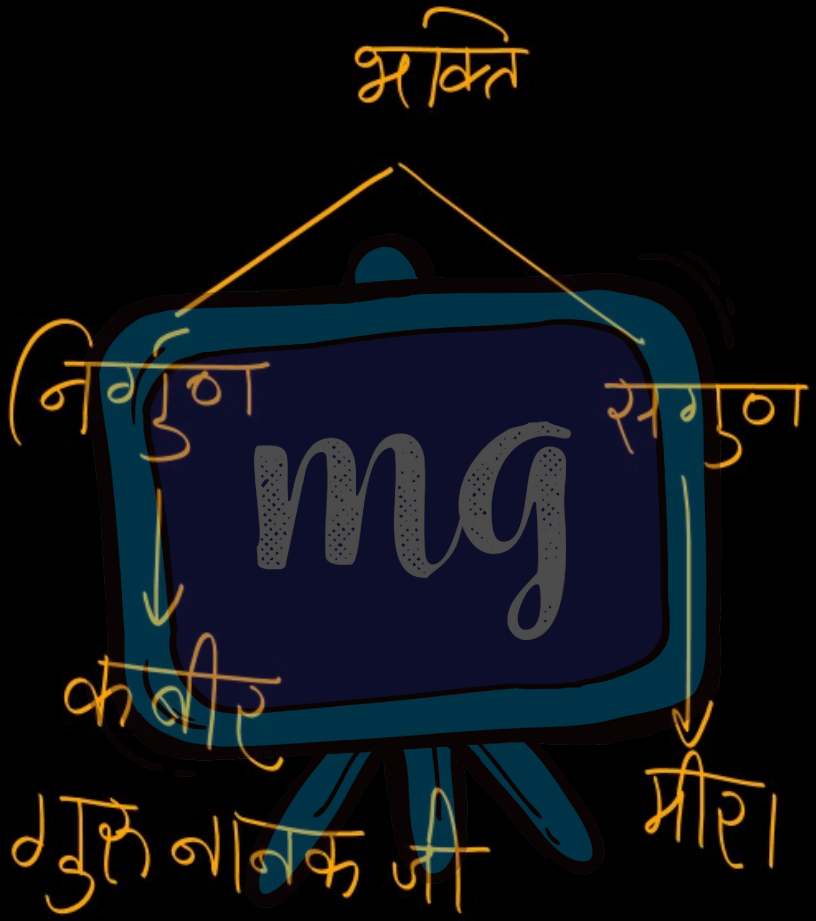
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कबीर :-

स्त्रोत
↓
साहित्य

- कबीर (चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी)-
- इतिहासकारों ने उनके जीवन और काल का अध्ययन उनके काव्य और बाद में लिखी गई

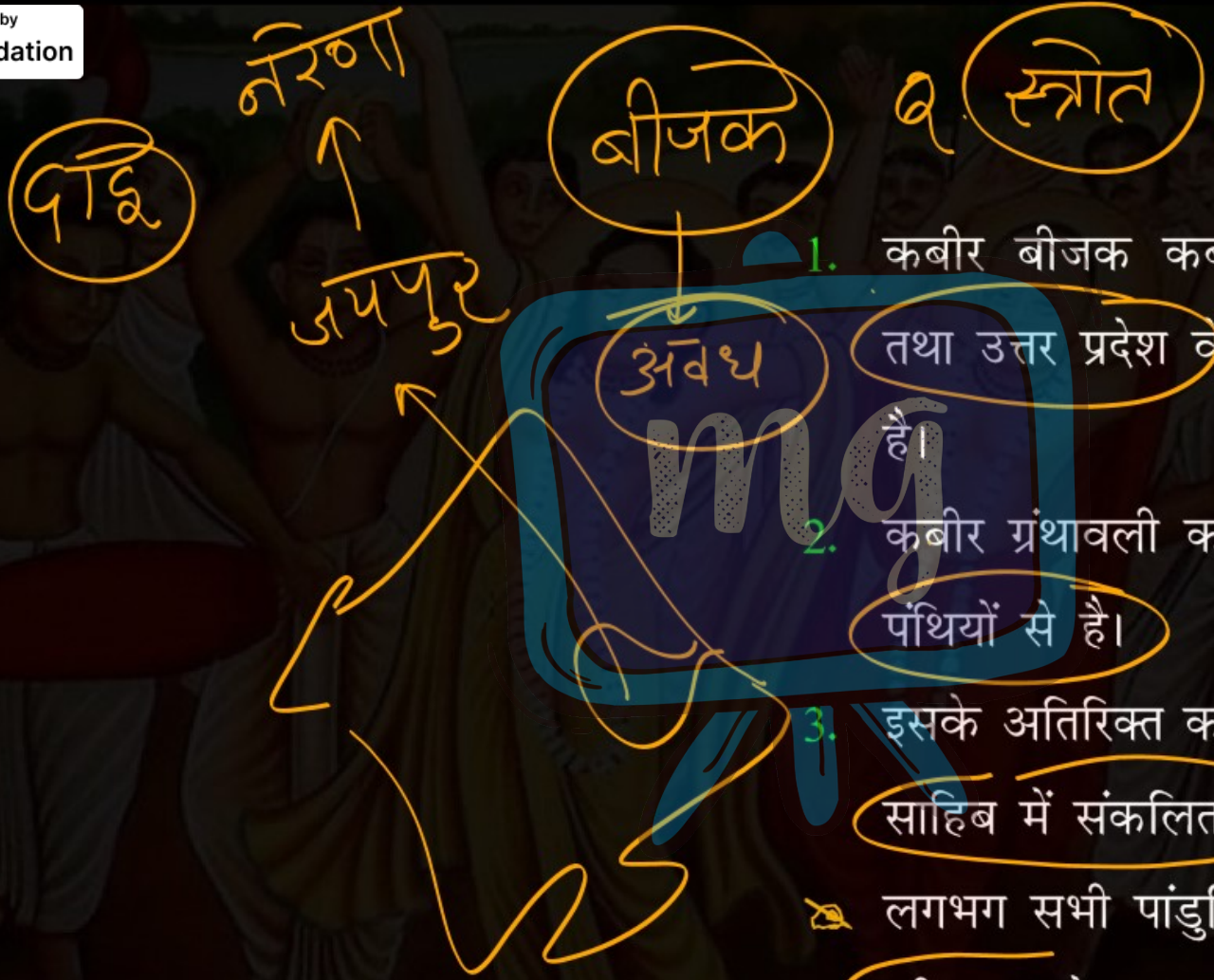


जीवनियों के आधार पर किया है। यह प्रक्रिया कई वजहों से चुनौतीपूर्ण रही है।

- कबीर की बानी तीन विशिष्ट किंतु परस्पर व्याप्त परिपाटियों में संकलित है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. कबीर बीजक कबीर पंथियों द्वारा वाराणसी तथा उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों पर संरक्षित है।
2. कबीर ग्रंथावली का संबंध राजस्थान के दादू पंथियों से है।
3. इसके अतिरिक्त कबीर के कई पद आदि ग्रंथ साहिब में संकलित हैं।

- लगभग सभी पांडुलिपियों का संकलन कबीर की मृत्यु के बहुत बाद में किया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कबीर की रचनाएँ अनेक भाषाओं और बोलियों में मिलती हैं।
- इनमें से कुछ निर्गुण कवियों की खास बोली संत भाषा में हैं।
- कुछ रचनाएँ जिन्हें उलटबाँसी (उलटी कही उक्तियाँ) के नाम से जाना जाता है, इस प्रकार से लिखी गई कि उनके रोज़मर्रा के अर्थ को उलट दिया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कबीर परिपाटियाँ

- कबीर बानी की एक और विशिष्टता यह है कि उन्होंने परम सत्य को वर्णित करने के लिए अनेक परिपाटियों का सहारा लिया।
- इस्लामी दर्शन की तरह वे इस सत्य को अल्लाह, खुदा, हज़रत और पीर कहते हैं।
- वेदांत दर्शन से प्रभावित वे सत्य को अलख (अदृश्य), निराकार, ब्रह्मन् और आत्मन् कहकर भी संबोधित करते हैं।

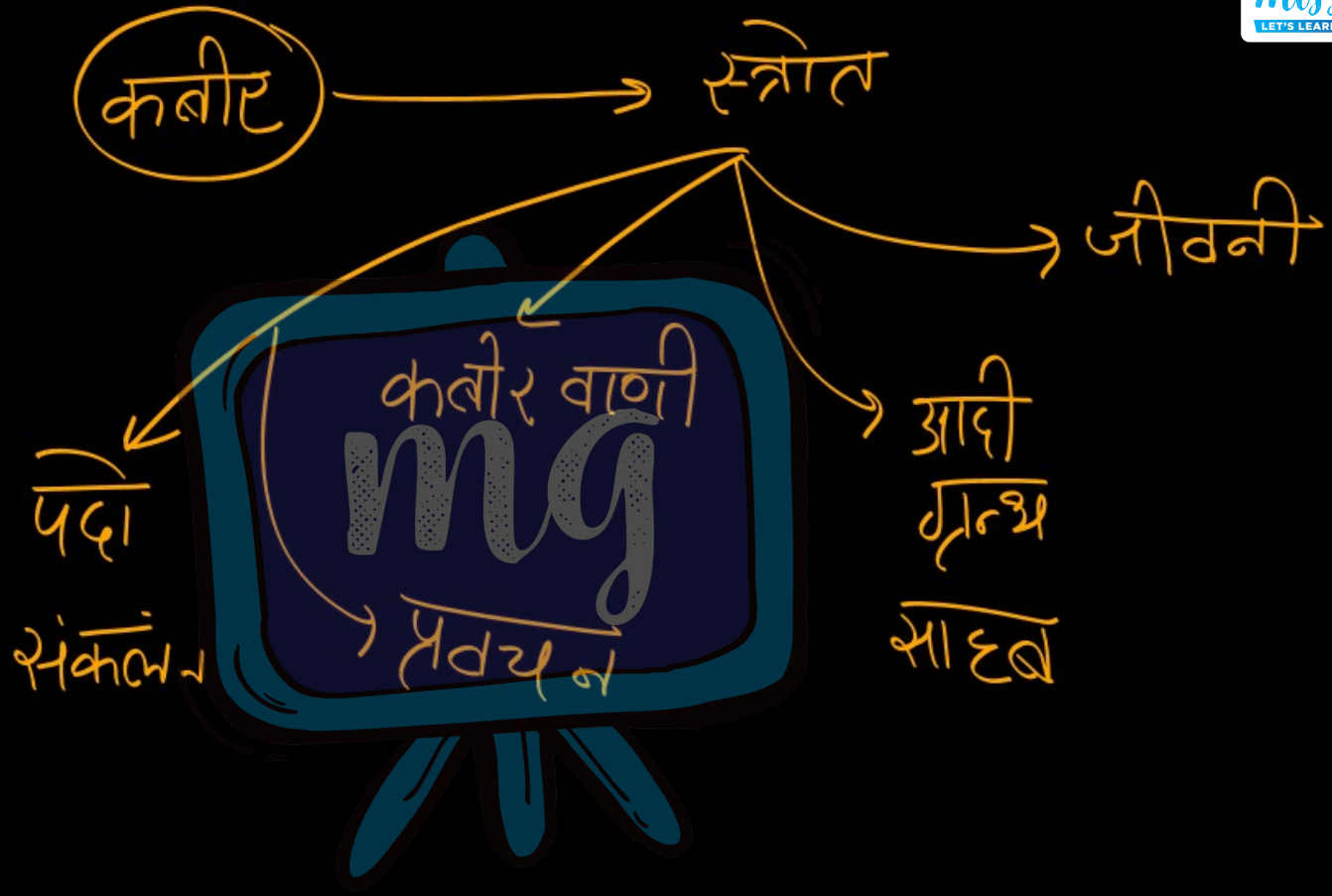
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ कविताएँ इस्लामी दर्शन के एकेश्वरवाद और मूर्तिभंजन का समर्थन करते हुए हिंदू धर्म के बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का खंडन करती हैं।
- अन्य कविताएँ ज़िक्र और इश्क के सूफ़ी सिद्धांतों का इस्तेमाल 'नाम सिमरन' की हिंदू परंपरा की अभिव्यक्ति करने के लिए करती हैं।

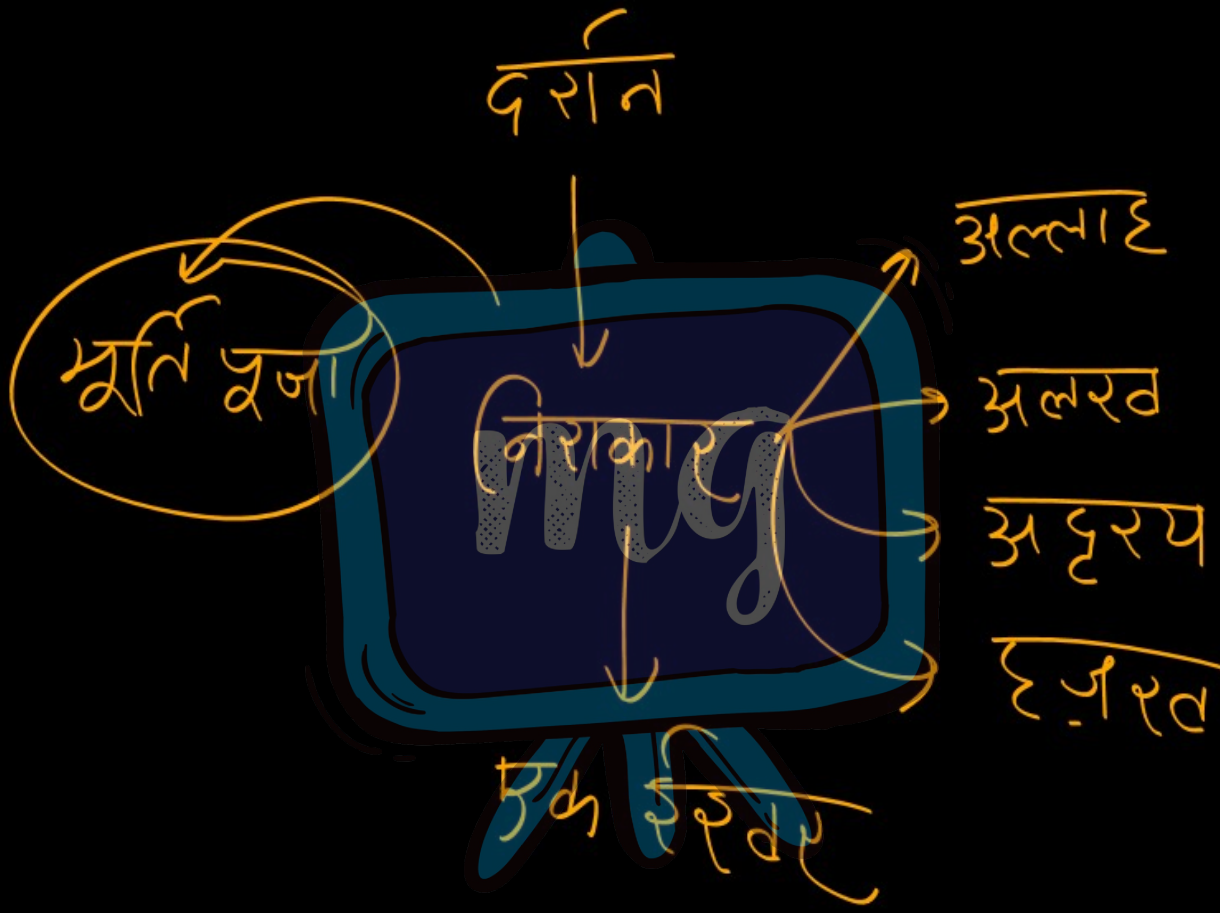
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

वेदान्त दर्शन

इस्लाम → ईकेश्वरवाद



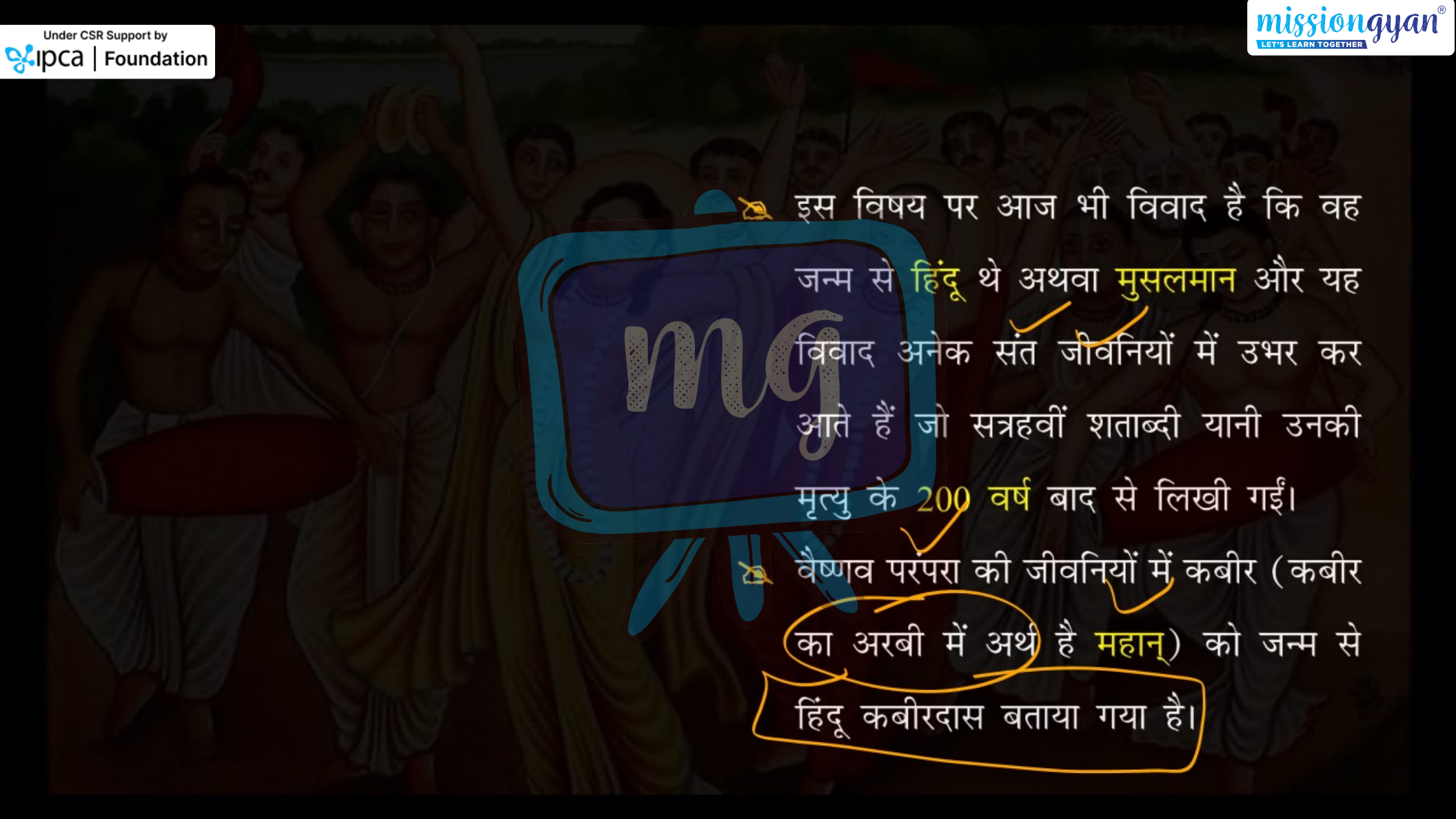
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- क्या ये सभी कविताएँ कबीर द्वारा रची गईं? यह कहना मुश्किल है।
- कबीर की समृद्ध परंपरा इस तथ्य की द्योतक है कि कबीर पहले और आज भी उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं जो सत्य की खोज में रूढ़िवादी, धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं, विचारों और व्यवहारों को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इस विषय पर आज भी विवाद है कि वह जन्म से हिंदू थे अथवा मुसलमान और यह विवाद अनेक संत जीवनियों में उभर कर आते हैं जो सत्रहवीं शताब्दी यानी उनकी मृत्यु के 200 वर्ष बाद से लिखी गईं।
- वैष्णव परंपरा की जीवनियों में कबीर (कबीर का अरबी में अर्थ है महान्) को जन्म से हिंदू कबीरदास बताया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- किंतु उनका पालन गरीब मुसलमान परिवार में हुआ जो जुलाहे थे और कुछ समय पहले ही इस्लाम धर्म के अनुयायी बने थे।
- इन जीवनियों में यह भी कहा जाता है कि कबीर को भक्ति का मार्ग दिखाने वाले गुरु रामानंद थे।
- इतिहासकारों का यह भी मानना है कि कबीर और रामानंद का समकालीन होना मुश्किल प्रतीत होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पंजाब → ननकाना

बाबा गुरु नानक और पवित्र शब्द

- बाबा गुरु नानक (1469-1539) → इनका जन्म एक हिंदू व्यापारी परिवार में हुआ।
- उनका जन्मस्थल मुख्यत: इस्लाम धर्मावलंबी पंजाब का ननकाना गाँव था जो रावी नदी के पास था।



- उन्होंने फारसी पढ़ी और लेखाकार के कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उनका विवाह छोटी आयु में हो गया था किंतु वह अपना अधिक समय सूफ़ी और भक्ति संतों के बीच गुज़ारते थे।
- उन्होंने दूर-दराज़ की यात्राएँ भी कीं।
- उन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया।
- धर्म के सभी बाहरी आडंबरों को उन्होंने अस्वीकार किया जैसे- यज्ञ, आनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति पूजा व कठोर तप।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

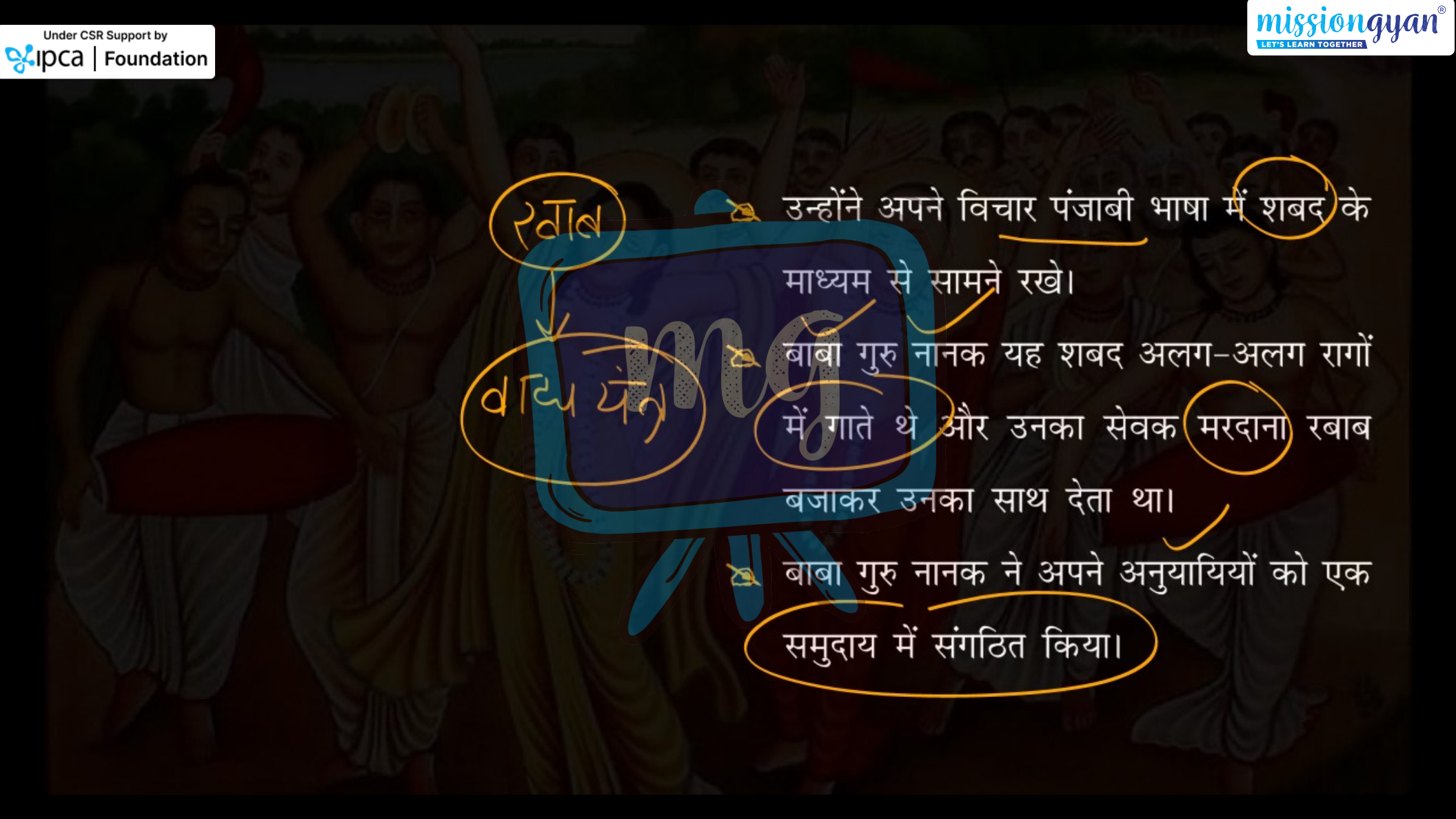
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नाम जप

- हिन्दू और मुसलमानों के धर्मग्रंथों को भी उन्होंने नकारा।
- बाबा गुरू नानक के लिए परम पूर्ण रब का कोई लिंग या आकार नहीं था।
- उन्होंने इस रब की उपासना के लिए एक सरल उपाय बताया और वह था उनका निरंतर स्मरण व नाम का जाप।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

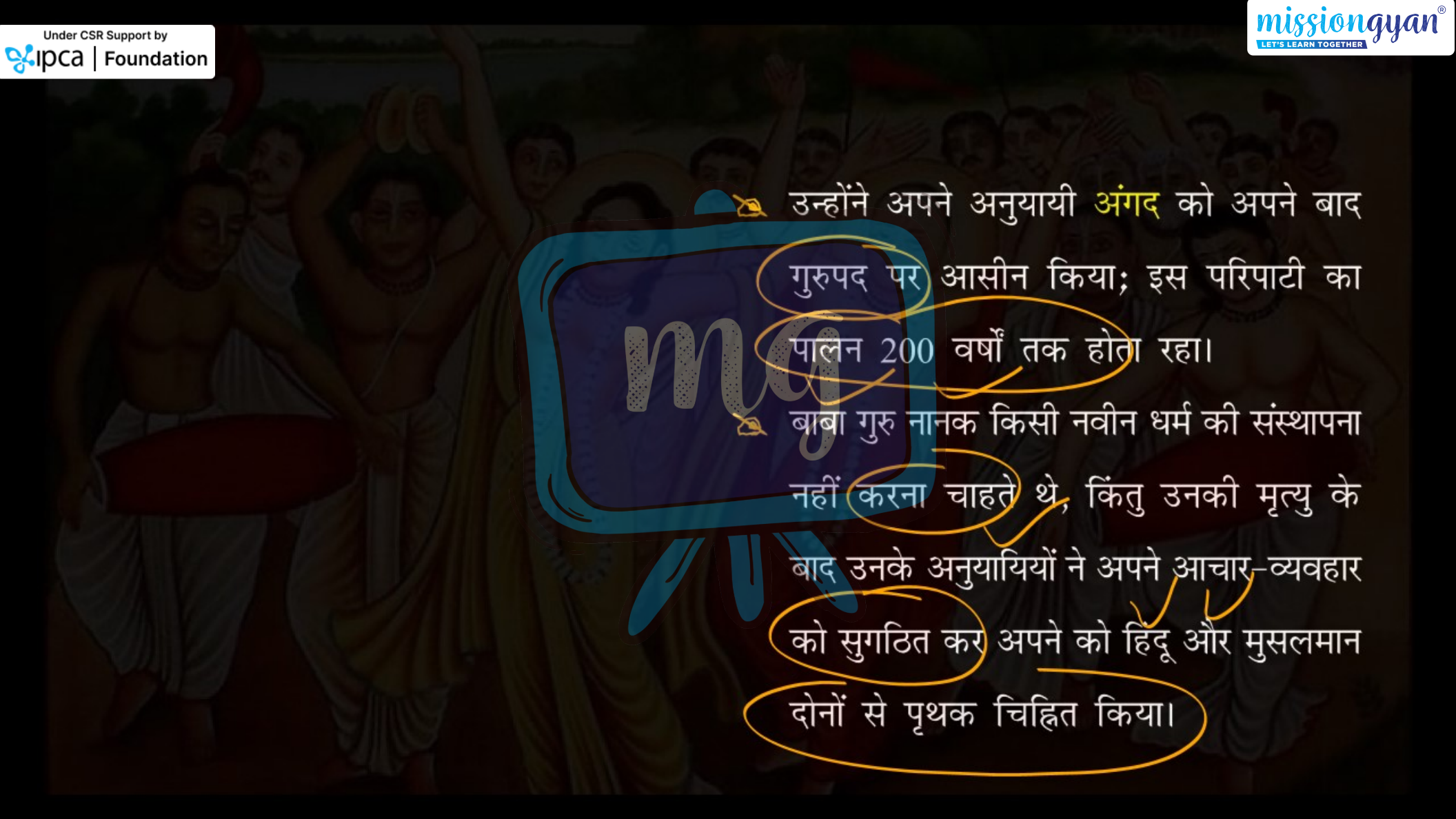
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- उन्होंने अपने विचार पंजाबी भाषा में शबद के माध्यम से सामने रखे।
- बाबा गुरु नानक यह शबद अलग-अलग रागों में गाते थे और उनका सेवक मरदाना रबाब बजाकर उनका साथ देता था।
- बाबा गुरु नानक ने अपने अनुयायियों को एक समुदाय में संगठित किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

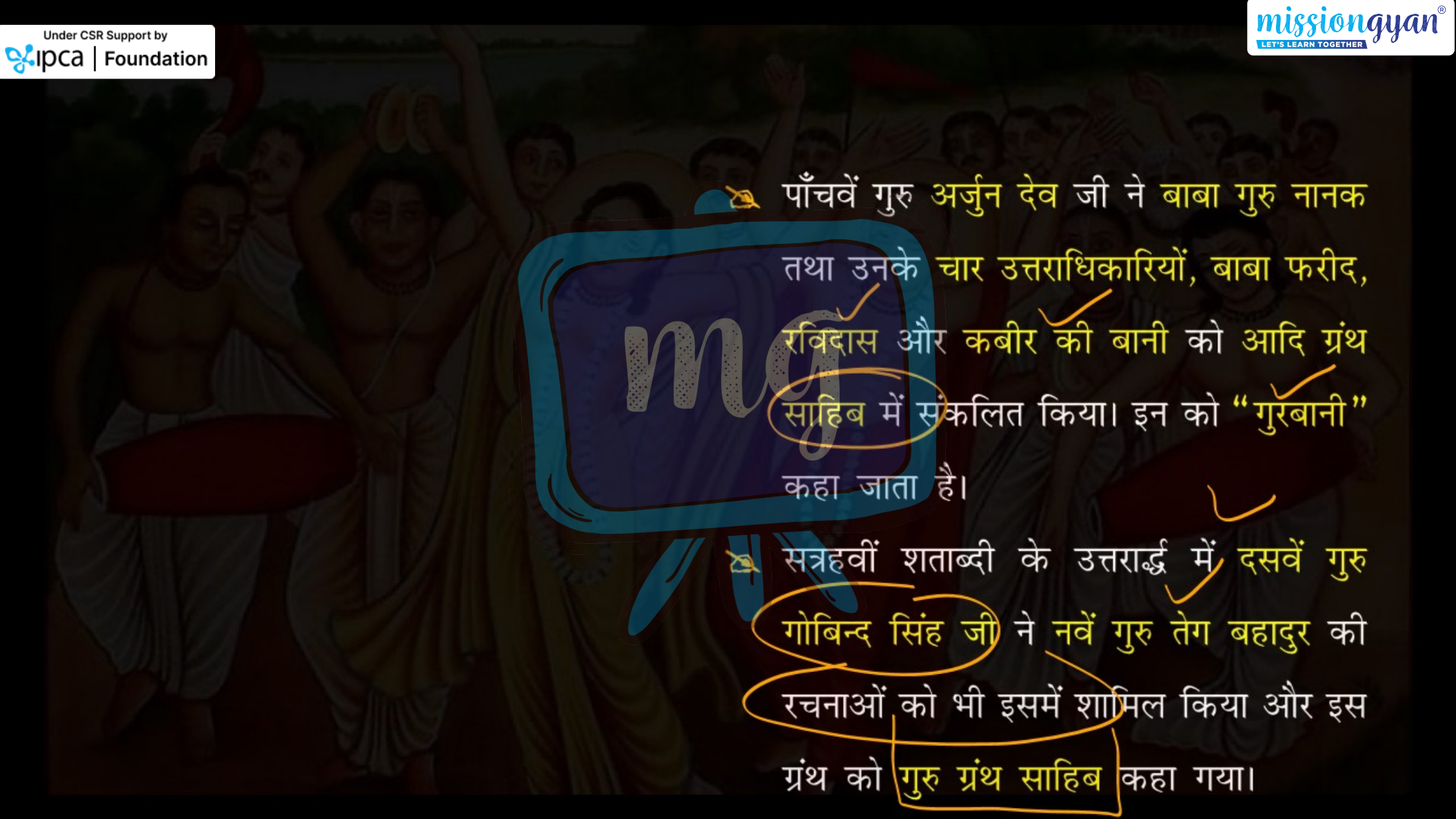
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- उन्होंने अपने अनुयायी अंगद को अपने बाद गुरुपद पर आसीन किया; इस परिपाटी का पालन 200 वर्षों तक होता रहा।
- बाबा गुरु नानक किसी नवीन धर्म की संस्थापना नहीं करना चाहते थे, किंतु उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने अपने आचार-व्यवहार को सुगठित कर अपने को हिंदू और मुसलमान दोनों से पृथक चिह्नित किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- पाँचवें गुरु अर्जुन देव जी ने बाबा गुरु नानक तथा उनके चार उत्तराधिकारियों, बाबा फरीद, रविदास और कबीर की बानी को आदि ग्रंथ साहिब में संकलित किया। इन को "गुरबानी" कहा जाता है।
- सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दसवें गुरु गोबिन्द सिंह जी ने नवें गुरु तेग बहादुर की रचनाओं को भी इसमें शामिल किया और इस ग्रंथ को गुरु ग्रंथ साहिब कहा गया।

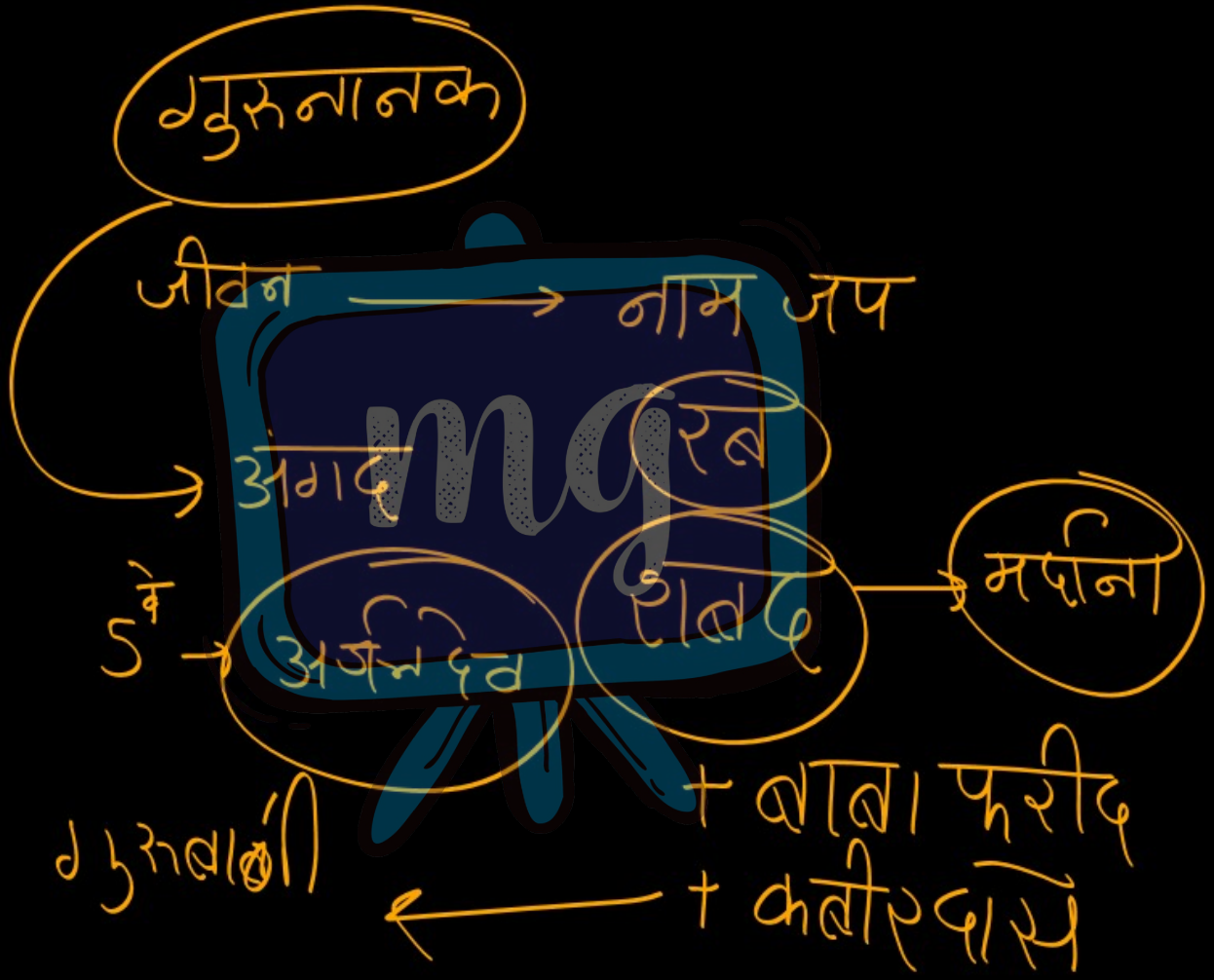
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- गुरु गोबिन्द सिंह ने खालसा पंथ (पवित्रों की सेना) की नींव डाली और उनके पाँच प्रतीकों का वर्णन किया : बिना कटे केश, कृपाण, कच्छ, कंघा और लोहे का कड़ा।
- खालसा पंथ की स्थापना :- 13 अप्रैल 1699
- गुरु गोबिन्द सिंह के नेतृत्व में समुदाय एक सामाजिक, धार्मिक और सैन्य बल के रूप में संगठित होकर सामने आया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

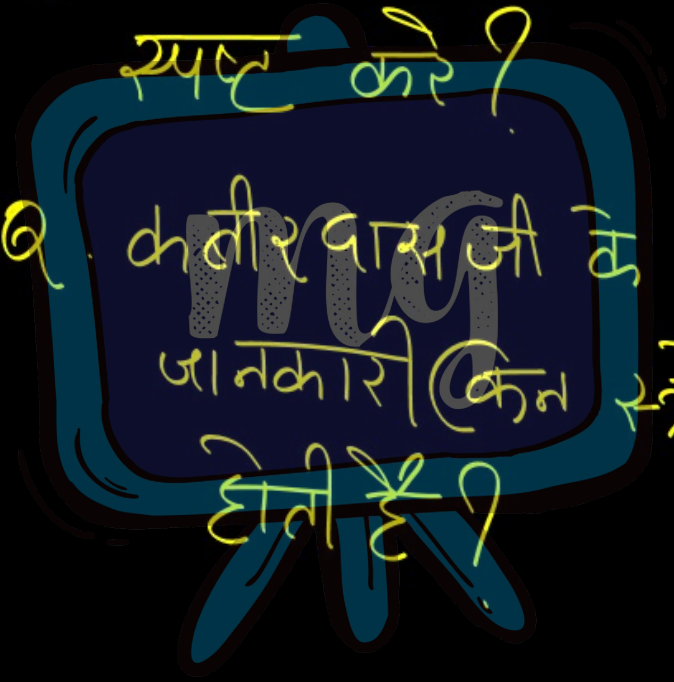
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मधुर गतिबद्ध → मधुर गद्य साहित्य



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



प्रश्न 6. कबीर दास जी के दर्शन को स्पष्ट करें?

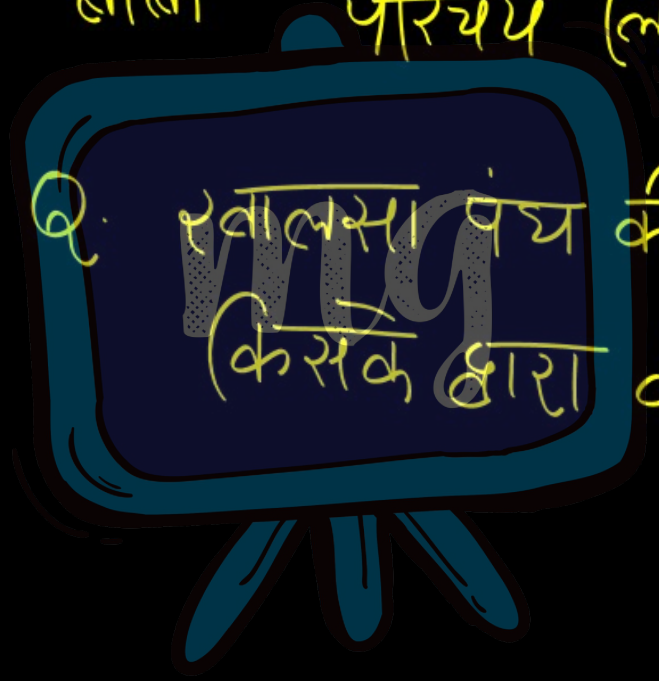
प्रश्न 7. कबीरदास जी के बारे हमें जानकारी किन स्त्रोत से प्राप्त होती है?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. गुरुनानक जी की जीवन
बाबा परिचय लिखें ?

Q. खालसा पंथ की स्थापना
किसके द्वारा की गई ?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सगुण

मीराबाई, भक्तिमय राजकुमारी

- मीराबाई (लगभग पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी)- ये संभवत: भक्ति परंपरा की सबसे सुप्रसिद्ध कवयित्री हैं।



- मीराबाई मारवाड़ के मेड़ता जिले की एक राजपूत राजकुमारी थीं जिनका विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया कुल में कर दिया गया।

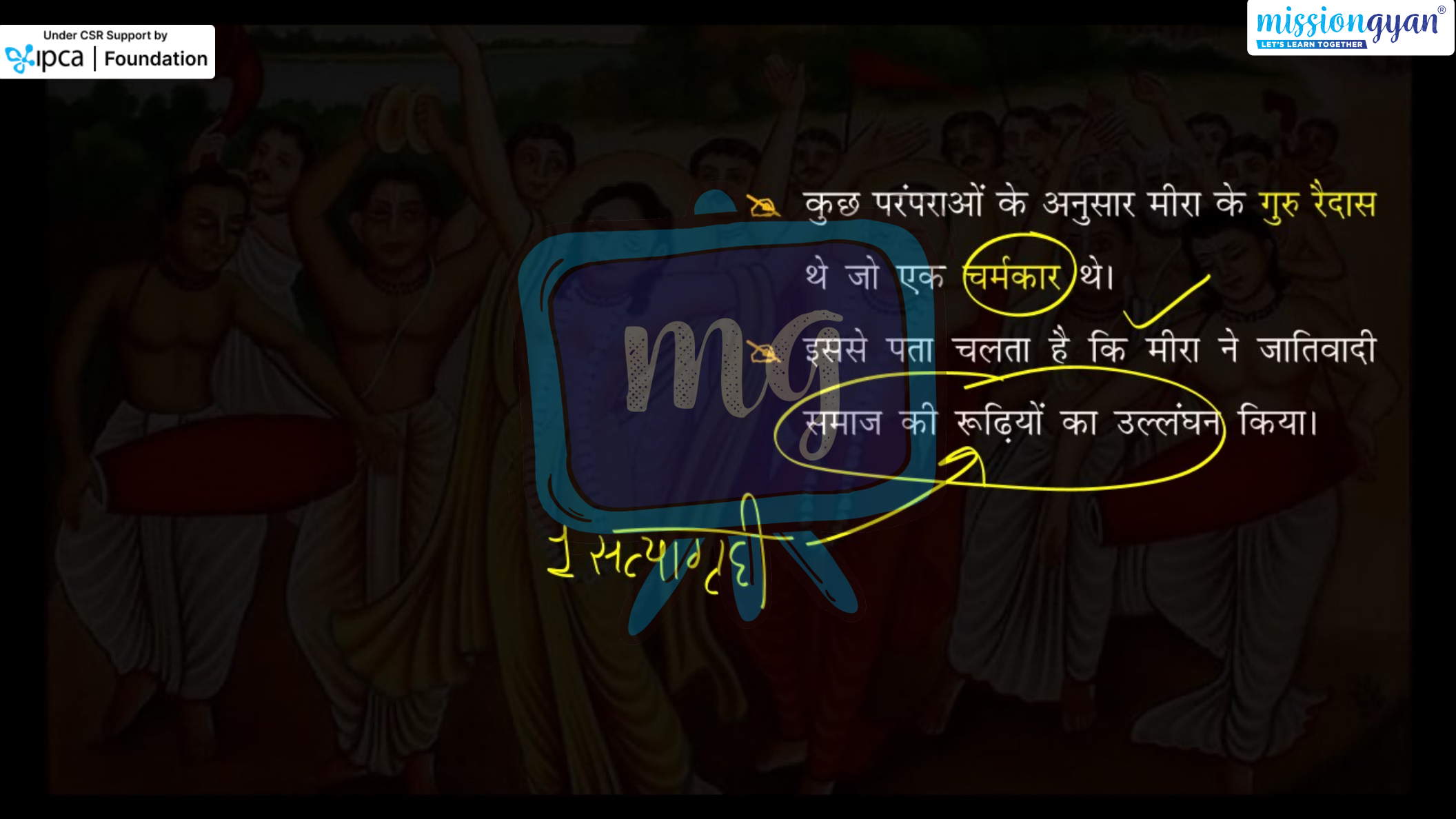
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करते हुए पत्नी और माँ के परंपरागत दायित्वों को निभाने से इनकार किया और विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना एकमात्र पति स्वीकार किया।
- वह राजभवन से निकल कर एक परिब्राजिका संत बन गई।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- कुछ परंपराओं के अनुसार मीरा के गुरु रैदास थे जो एक चर्मकार थे।
- इससे पता चलता है कि मीरा ने जातिवादी समाज की रूढ़ियों का उल्लंघन किया।

mg